OM 19 a_Page 1 and 2 14/01/2015 09:46 Page 3

इस असार संसार के सार थे ब्रह्मा बाबा

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

ब्रह्मा बाबा, जिनको अव्यक्त हुए अब 46 वर्ष हो चले हैं, की प्रतिभा बहुमुखी थी। उनके व्यक्तित्व का एक विशेष पहलू यह था कि कोई बच्चा हो या बूढ़ा, धनवान हो या निर्धन, विद्वान हो या अशिक्षित, जल्दी ही उनकी निकटता का अनुभव करता था। हरेक को ऐसा अनुभव होता था कि बाबा के मुखारविन्द से जो शब्द विनिमृत हो रहे हैं, वे आत्मीयता और अपनत्व को लिए हुए हैं। उनमें औपचारिकता कम है परंतु शिष्टता-युक्त स्नेह अधिक। कितना भी कोई कमर कस कर उनके पास आता, वह उनके स्नेह से घायल हुए बिना न लौटता। वह बाबा से दोबारा अथवा बार-बार मिलने की इच्छा मन में लेकर जाता। बाबा का प्यार पत्थर को भी पिघला कर पानी बना देता और तपत का ताप बुझाकर उसे शांति और शीतलता प्रदान करता, उनके पास बैठकर, उनसे मिलकर, उनके वचन सुनकर ऐसा लगता कि इस बेगाने संसार में हमने यहाँ ही अपनापन पाया है। एक यही जगह है जहाँ कृत्रिमता नहीं बल्कि वास्तविकता है और जिसके वचन हम सुन रहे हैं, उसके मन में एक ऐसा प्यार और दुलार है जो इस विशाल संसार में ढूंढ़ने पर भी अन्य कहीं नहीं मिल सकता। वह प्यार मन में इतना गहरा उतर जाता कि उसकी गहराई समुद्र से भी अधिक और उसकी छाप एक अमिट स्याही के ठप्पे की छाप से भी अधिक अमिट बन जाती। उनके वचन एक ऐसा प्रसाद का रूप थे जो सचमुच मन की चंचलता को हर लेते और आत्मा में मिठास भर देते। इसी प्रसंग में देहली के एक व्यक्ति के वृत्तांत का उल्लेख करना समुचित होगा। वह बाबा का कट्टर विरोधी था। उसका कारण यह था कि उसकी धर्मपत्नी ईश्वरीय सेवाकेन्द्र में आती थी और वह उस सपत्नीक जीवन में भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने में सुदृढ़ थी। वह व्यक्ति समझता था कि बाबा ने उससे कुछ छीन लिया है और उसको भोग-सुख से वंचित किया है। अत: उसके मन में बाबा के प्रति घृणा, वैर, द्वेष और रुष्ट भाव था। एक बार जब बाबा देहली में आये तो उसे मालूम हुआ कि जिस ईश्वरीय सेवाकेन्द्र पर उसकी धर्मपत्नी जाती है, वहाँ से एक बस प्रात: 4.00-4.30 बजे क्लास के भाई-बहनों को लेकर वहाँ क्लास के लिए जाती है, जहाँ बाबा ठहरे हुए हैं। एक दिन यह सोचकर कि वह भी उस बस के द्वारा वहाँ पहुँचकर बाबा से झगड़ा करेगा। प्रात: ही अपनी धर्मपत्नी के पीछे-पीछे आते हुए, धर्मपत्नी के मना करने पर भी केन्द्र पर पहुँचकर उस बस में बैठ गया। सभी ने बहुत प्रयत्न किये उसे क्लास में न ले जाने के और बाबा से दूर रखने के, क्योंकि सभी उसके स्वभाव से वाकिफ थे, लेकिन लाख कोशिशों के बावजूद भी वह क्लास में आ ही गया।

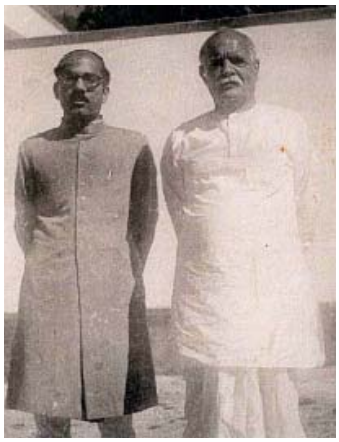

वह वहाँ क्लास के अंत में जाकर बैठा परंतु बैठने के बाद वहाँ से हिला नहीं। क्लास के सारा समय उसने गर्दन भी नहीं हिलाई। वह बाबा को एकटक होकर देखता ही रहा और सुनते-सुनते मंत्रमुग्ध हो गया। क्लास के बाद जब उसे उठने के लिए कहा गया तब वह उठता ही नहीं था। उसकी आँखें इतनी गीली थी कि आँसू टपकने को आ रहे थे। बाबा से लड़ने की बजाय वह अपनी पत्नी को उलाहना देने लगा। वह बोला, बाबा तो अस्सी साल का जवान है! कितना खूबसूरत है बाबा! कैसे सीधे बैठते हैं! तू अब तक पवित्रता की ही बात मुझसे कहती रही और ऐसे बाबा के बारे में तो कुछ बताया ही नहीं। मैं बाबा से मिलकर आऊँगा। वह टोली लेने के लिए बाबा की ओर बढ़ा, बाबा ने उसे पुचकारते और मुस्कुराते हुए टोली दी और वह ऐसा खुश हो गया कि उसे भी अपना बाबा मिल गया।

इसके अलावा बाबा की विशेषताओं में से एक विशेषता थी कि वे ज्ञान को सम्पूर्णता से समझने और समझाने के प्रयत्न केवल लिखित सामग्री ही के द्वारा नहीं करते थे बल्कि जब कहीं सम्मेलन या प्रवचन आदि होता, उसमें भी बाबा तीन प्रकार की सम्पूर्णता की ओर ले जाने का सदा विशेष प्रयास कराते रहते। एक तो बाबा इस ओर ध्यान खिंचवाते कि वक्ता की अपनी स्थिति पवित्र और योग-युक्त होनी चाहिए। इसे वे यों समझाते कि जैसे तलवार का जौहर होना ज़रूरी है, ऐसे ही पवित्रता और योग-युक्त स्थिति ज्ञान-रूपी तलवार का जौहर है। दूसरा वे इस ओर ध्यान खिंचवाते कि प्रवचन में कौन-कौन सी बात बताना ज़रूरी है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए वे समझाते कि जैसे कोई अच्छा वकील ऐसा नुक्ता बता देता है कि जिससे बात जज की समझ में आ जाती है और जो जज पहले फांसी की सजा देने की बात सोच रहा था, वह अब अपराधी को मुक्त करने का निर्णय करता है। वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति को भी ऐसी-ऐसी बात सुनानी चाहिए कि पापी, पतित या अपराधी व्यक्ति की बुद्धि में वह ऐसी बैठ जाए कि पहले जहाँ वह भोग-विलास के जीवन की ओर प्रवृत्त था अब वह उससे मुक्त होने की बात का निर्णय करता है। बाबा कहते कि वकील को अगर समय पर प्वाइंट याद नहीं आयेगी और वे जज के आगे कुछ नहीं रखेगा तो अपराधी अपना मुकदमा हार जाएगा और दण्ड का भागी होगा। यहाँ तक कि हो सकता है, उसे मृत्युदण्ड भी भोगना पड़े। अर्थात् वकील की छोटी-सी गफलत से कितना नुकसान हो सकता है। इसी प्रकार ज्ञानवान प्रवक्ता अगर भाषण के समय आवश्यक बातें कहना भूल जाता है तो सुनने वाले लोग विषय-विकारों में गोता लगाए दु:ख-दंड के भागी बनते रहते हैं। तीसरा, वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते कि बात समझाने की विधि क्या हो। केवल बात ही ज़रूरी नहीं होती, बात करने का तरीका भी महत्वपूर्ण होता है। बात कहना भी एक कला है। उस पर ध्यान देना, उसका अभ्यास करना, उसमें सम्पूर्णता लाना भी ज़रूरी है। इस बात को समझाते हुए वे कहते कि डॉक्टर जब किसी को टिंक्चर आयोडीन लगाता है तब वह उसे साथ-साथ सहलाता भी है, फूंक भी मारता है। जब कोई सर्जन किसी का ऑपरेशन करता है तो वह उसे क्लोरोफॉर्म सूंघाता है ताकि उसे दर्द न हो। जब कोई इंजेक्शन लगाता है, तब वह पहले सूई को ऊबलते पानी में डाल कर कीटाणु-रहित और संक्रमण-रहित करता है। इस प्रकार बाबा समझाते-दूसरों को सम्मान देते हुए तथा स्नेह और मर्यादा युक्त, शुभ और कल्याण की भावना से, अनुभव, निश्चय और ओज की भाषा से समझाना चाहिए, तब जाकर वह तीर ठिकाने पर लगता है। इस प्रकार बाबा हर प्रकार से ज्ञान एवं योग के महत्व को समझाते थे। ऐसे बाबा को भूलना संभव नही।

मन-संताप हरने...पेज 1 का शेष

उन्हें सेवा का उपहार दिया, वह अन्य कोई नहीं दे सकता। उनकी तथा उन जैसे अनेकों युगलों की ज़िम्मेवारी लेकर कदम-कदम पर उन्हें मार्ग-प्रदर्शना देना, उनका उत्साह बनाये रखना, उन्हें मंज़िल की ओर आगे बढ़ाते चलना, उन्हें अनेक प्रकार के आँधी-तूफानों से पार करना, उनके जीवन को नीरस न होने देना, उन्हें एक ऐसा लक्ष्य देना कि जिसमें वे निरन्तर लगे रहें और उनके कुल जीवन को योग के साँचे में ढ़ाल देना, यह कोई आसान काम नहीं है। ऐसे सैंकड़ों और हज़ारों विवाहित, अविवाहित और नवविवाहित लोगों को पवित्रता के पद पर आसीन करके उन्हें लौकिक से अलौकिक बना देना एक ऐसी मेहनत का काम है कि जिसे न अन्य कोई कर सकता है और न ही कोई अपने सिर पर लेगा। एक-एक वत्स पर ब्रह्मा बाबा ने जितनी मेहनत की, जितना ध्यान दिया, जितना प्यार बरसाया और अपना जितना तन, मन, धन लगाया, वह संसार के इतिहास में न आज तक किसी ने किया है और न कोई कर सकता है। जिन्होंने उनके इस करिश्मे को देखा है, जिनका अपना जीवन उस प्यार से सींचा गया है, केवल वे ही इस सौभाग्य की साक्षी दे सकते हैं। अन्य जो आज थोड़े समय के लिए सम्मेलनों और उत्सवों में उन वत्सों के सम्पर्क में आते हैं, जिनमें बाबा ने ज्ञान-योग-धारणा-सेवा त्याग रूपी पंचामृत भर दिया है, वे उन वत्सों के ज्ञान या प्रेम या धारणा या सेवा आदि से प्रभावित तो होते हैं परन्तु शायद वे इसका अंदाज़ा नहीं लगा सकते कि ब्रह्मा बाबा ने 63 जन्मों से थकी-मांदी और गुमराह हुई आत्माओं को कैसे राह पर लगाकर, उनके विकारों की तपत बुझाकर उन्हें नई दुनिया का आदर्श बनाने की अवर्णनीय मेहनत की होगी। 18 जनवरी विश्व शांति दिवस पर ऐसे आध्यात्मिक पुरोधा को शत:शत: नमन।

धार। कलेक्टर जयश्री कियावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सत्या। साथ हैं जी.प.सी.ओ. श्रीकान्त जलोर, डॉ. लता चौहान, ब्र.कु. राधा तथा अन्य।

मुम्बई-विक्रोली। नवनिर्वाचित विधायक सुनील राऊत को गुलदस्ता भेंट कर अभिनंदन करते हुए ब्र.कु. निलिमा।

पटनागढ़। के. सुदर्शन चक्रवर्ती,सब कलेक्टर,आइ.ए.एस. की ओर से ईश्वरीय प्रसाद स्वीकार करते हुए ब्र.कु. सुजाता।

मोगा-पंजाब। गोपाल कृष्ण इंडस्ट्रीज़ की मैनेजिंग डारेक्टर श्रीमती इन्द्र पुरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संजीवनी। साथ हैं देवीदास चैरीटेबल ट्रस्ट के सदस्य वीरेन्द्र कौड़ा, शास्त्री जी तथा ब्र.कु. भाई-बहन।

जशपुर नगर। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् विधायक राजशरण भगत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलम। साथ हैं ब्र.कु. रुकमणि।

हाथरस। भजन संध्या कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए जिलाधिकारी शमीम अहमद, डॉ. राम अवतार शर्मा,पूर्व कुल सचिव,आगरा वि.वि., ब्र.कु. सीता तथा अन्य।